WAQAT KI RAFATAR

RAJU KUMAR

WAKAT KI ULJHAN

WAKTHAI WAKT TO KARWATLETI
HAI HUM BHI HAI INJAR M

RAJU KUMAR

BlueRose ONE .com DIY
Stories Matter

© RAJU KUMAR 2023

All rights reserved by the author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without the prior permission of the author.

Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the author and publisher assume no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of the information contained within.

Title: WAKAT KI ULJHAN

Language: Hindi

Character set encoding: UTF-8

First published by

An Imprint of BlueRose Publishers

Head Office: B-6, 2nd Floor,
ABL Workspaces, Block B, Sector 4,
Noida, Uttar Pradesh 201301
M: +91-8882 898 898

BlueRose ONE .com
DIY
Stories Matter

DEDICATION

To my family

ACKNOWLEDGEMENTS

सूचना

इस कवि ता का कि सी भी तरह से छापना या कोई प्रतीलि पिलेना बि ना सम्पादक के अनुमती के वीना अपराध माना जायगा इस मे सलि प्त कि सी भी ब्यक्ति को पाय जाने परइसके खि लाफ़ कारवाई की जा सक्ति है ।कवि एक साधरण मद्ध्यम वर्ग परि वार से तालक रखत है ।अपनी माता को याद कर के जो की अभी जीवि त नहीहै रोने लगे उनकी माता का नाम बि ध्या था बोलने लगे मा अपनी नाम को सार्थक करो और सरस्वती माता कोयाद कि ये। जि सके बाद उनको कबि ता लि खने की प्रेरणा मि ली।अभी वे साधारण सी नि जी कंपनि यों मे छोटे से पद पर कार्यरत है।

FOREWORD

पुन्य तिथी २३ औगुस्त २०२०

PREFACE

इस कवि ता का कि सी भी तरह से छापना या कोई प्रतलि पिलेना बि ना सम्पादक के अनुमती के वीना अपराध माना जायगा इस े मे सलि प्त कि सी भी ब्यक्ति को पाय जाने परइसके खि लाफ़ कारवाई की जा सक्ति है ।कवि एक साधरण मद्ध्यम वर्ग परि वार से तालकु रखत े है ।अपनी माता को याद कर े के जो की अभी जीवि त नहीहै रोने लगे उनकी माता का नाम बि ध्या था बोलने लगे मा अपनी नाम को सार्थक करो और सरस्वती माता को याद किये। जि सके बाद उनको कबिता लि खने की प्रेरणा मिली।अभी वे साधारण सी नि जी कंपनि यों मे छोटे से पद पर कार्यरत है।

PROLOGUE

पिता की प्रेरणा माता की समवेदना

इस कविता का माद्यम केवल लोंगो को अपने परवेश से अवगत करना कविता के माद्यम से लोंगो को जीवन मे सिखले, उसके प्रति प्रेम प्रकट करना , जीवन को उन्नती तरफ प्रशस्त करना है | हम किसी भी तरिके से किसी की जाति , धर्म, वर्ग को ठेस नहीं पहुन्चाना चाहते हैं | अगर कविता किसी भी वाक्य या पंक्ति किसी से मिलता जुलता हैतो ये संयोग है | ये कविता किसी की प्रतिलिपि नहीं है , मै उन कवियों को तहे दिल से शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जिस से पढ़कर जिवन मे कविता लिखने का भाव उत्पन्न हुआ तथा पिता की प्रेरणा से और मा की याद मे समवेदना मे मैने ये कविता लिखी है , इसमे किसी प्रकार के त्रुटी हो तो मुझे माफ करे और आगे मै सुधार करने की कोशिश करुंगा | सभी बडों ,गुरुजनों को प्रणाम |

प्रेरक कवि मैथिली शरण गुप्त , कुमार विश्वास, दिनकर इत्यादी का मै आभारी हूं, की जीवन मे उनसे प्रेरणादायक कविता लिखने को मिला |

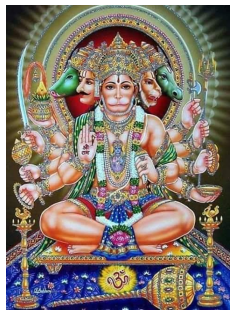

CONTENTS

COPYRIGHT DECLARATION II

DEDICATION V

ACKNOWLEDGEMENTS VIII

FOREWORD X

PREFACE XII

PROLOGUE XIV

CHAPTER 1
चंचल मन *21*

CHAPTER 2
चौक चौराहें *23*

CHAPTER 3
समाचार *25*

CHAPTER 4
हार को स्वीकार कर *27*

CHAPTER 5
क्रांती भी जरुरी है *29*

CHAPTER 6
समन्दर *31*

CHAPTER 7
द्व्वा हू *33*

CHAPTER 8
मेरी परछाई साथ मेरे रहती है

CHAPTER 9
वक्त बता मुझको तेरा ईरदा क्या है *37*

CHAPTER 10
चंचल है मन *39*

CHAPTER 11
बारि श की बुन्दे *41*

CHAPTER 12
पूर्णतीथी *43*

CHAPTER 13
शाम का साया *45*

CHAPTER 14
सागर की लहरे *47*

CHAPTER 15
गर्मी *49*

CHAPTER 16
खेत का सीपाही हू मै *51*

CHAPTER 17
पानी *53*

CHAPTER 18
उठो सन्वी हुआ सवेरा *55*

CHAPTER 19
बेताब सियाही हू *57*

CHAPTER 20

1. चंचल मन

चंचल मन क्युं है , तुम उदास पडा,

मै तो समय से हुँ बंधा , युं हि जिम्मेदारियों से घिरा|

चंचल मन तुम हो उन्माद बडा ,फिर क्यों सोंच मे पडा|

तुम तो एक मुसाफिर है कभी यहाँ कभी वहाँ पडा है|

चंचल मन क्युं है , तुम उदास बडा,मै तु हु कर्म चक्र से घिरा, तुम क्यों है इतना डरा- डरा |

तुम तो मुसाफिर है न कोई रास्ता न कोई मन्जिल,

न कोई ठीकाना,तेरे पास न है कोई बहाना|

चंचल मन तु हि कोई रास्ता मुझे बता क्यों मझधार मै हुँ घिरा,न मुझे कोई मन्जिल मिल रही न कोई रास्ता|

चंचल मन जा वादियों कि सैर कर आ , हवाओं को झक्झोर कर आ|

2. चौक चौराहें

चौक चौराहे जाता हूँ चाट पकौड़ेखाता हुँ ।

मद्धम मद्धम मुस्काता हुँ घर पर लौटकर आता हुँ।

पेट पकड सो जाता हुँ,

डाक्टर को दिख्लाता हुँ, क्यों चाट पकौड़े खाता हुँ।

क्यों मन को मै ललचाता हुँ, क्यों फिजुल खर्च बढाता हुँ।

मन हि मन मुस्काता हुँ, चौक चुराहे जाता हुँ।

आइसक्रिम खाता हुँ, दिल को थंडक पहुन्चाता हुँ।

कुलचे, मोमोज खाता हुँ, मन हि मन मुस्काता हुँ।

क्यों चौक चौराहे जाता हुँ, क्यों चाट पकौडे खाता हुँ।

3. समाचार

समाचार एक स्तम्भ है जो जनो मे ,

लाती बिचार धारा प्रचण है।

समाचार एक निदान है जो जनों कि, वरदान है, दिलाती पहचान है।

समाचार एक समवाद है, जो लोगो मे खास है , जो दिलाती विश्वास है।

समाचार एक अनुशासन है , जो जगाती प्रसाशन है।

समाचा विभिन्न प्रकार कि सोंच है ,

जो लोगों को बुराई से दिलाती मोकक्ष है।

समाचार एक बिचार है जो सबों मे सर्वोच्च है।

समाचार एक कहानी है, जो सबकी जुबानी है।

समाचार एक सच्चाई है , जो देश के लिए अच्छाई है।

4. हार को स्वीकार कर

हार को स्विकार कर की जितना है अगर ,

हार कर के हि कोई दुसरी मन्जिल पा़ता है।

हार को स्विकार कर , जित की पहचान है ,

लगे नहीं ठोकर अगर, सम्भल नहीं पाता है ।

ठोकर ही मनुष्य को आगे लेकर जाता है।

हार को स्विकार कर की जितना है अगर,

हार कर के ही कोई दुसरी मन्जिल पाता है।

है अगर कदम कभी डगमगा जाता है ,

गिर मत सम्भल अभि मन्जिल वही पाता है।

हो होसले बुलन्द जिसमे सफलता वही पाता है।

दौड कर दिखा सभी को सोंच को , कर बुलन्द रास्ते के कांटे

हजारों दौड कर जाना है|

है जो बडा वो छोटे को हराता है , जो बडी मछली

छोटी को ही खाता है|

हार को स्विकार कर लोग अथक , प्रयास से ही जीत को पाता है|

5. क्रांती भी जरुरी है

पागल पन्ती भी जरुरि है, दुनियाँ मे क्रान्ती भी जरुरि है।

कभी हरित क्रान्ती तो, कभी वजुद की क्रान्ती।

कभी किसान की क्रान्ती तो, कभी मन मे तरह-तरह की भ्रान्ती।

पागल पन्ती भी जरुरि है, दुनियाँ मे क्रान्ती भी जरुरि है।

कभी एक वेतन एक सम्मान की प्रवेश तो, कभी जीवन मे आवेश की।

पागल पन्ती भी जरुरि है, दुनियाँ मे क्रान्ती भी जरुरि है।

आगे बढ्ने की क्रान्ती जीवन मे, कुछ करने की क्रान्ती।

भ्रारत मे ब्रेंड्रेन की क्रान्ती जीवन मे परावेश की क्रान्ती,

जीवन मे कभी नहीं शान्ती।

6. समन्दर

समन्दर कितना बिशाल है, उसका कितना बडा आकार है।

इसमे कितना कोलाहल है, अन्दर इसके संसार है।

बारिश कि बुन्दों को खुद से सिमटे हुय, ||

देखकर इसको सबको रोंगटे खडे हुय।

चाहत इसकी आश्मान है, फिर भी कितना अशान्त है।

आसमान जिस् का प्रतिबिम्ब है, देख सबकी उडी निन्द है||

न जिससे बुझती प्यास है, फिर उसकी बाधिन्आश है।

न बाह्र से इतना विकराल है, अन्दर से उतना हि शान्त है||

-

-

7. द्व्वा हू

दवा हुँ दवा मै सबोकी द्वा हुँ।

हर दर्द की द्वा हुँ, हर मर्ज की द्वा हुँ।।

दवा हुँ दवा मै सबोकी द्वा हुँ।

चिन्ता सभी की फिक्र सभी की

नसे रहुँ मै कहूँ ना किसि से,

दवा हुँ दवा मै सबोकी द्वा हुँ।

हर जखम मे काम आउँ, हर मरिज से दुवा पाउँ।

दवा हुँ दवा मै सबोकी द्वा हुँ।

कटे तो बुला लो, छटे तो बुला लो

हर उमर मे काम आउँ, हर दिन काम आउँ।

हो दिन या रात सभी को दिलाऊ आराम।

दवा हुँ दवा मै सबोकी द्वा हुँ।

अनोखा है रुप, सबोकी कभी मै तरल हुँ,

कभी मै सरल हुँ।

कभी मै ठोस कभी मै पाउडर हुँ।

दवा हुँ दवा मै सबोकी द्वा हुँ।

है उधेश्य मेरा मरिजा को ठिक करना ,

है आशा मेरी सभी का दिल जितना ।।

8. मेरी परछाई साथ मेरे रहती है

मेरी परछाई साथ मेरी रहती है ,

कुछ नहीं मुझ से कहती है|

दर्द बयाँ करु कैसे मेरा हम साया तुम मेरा|

सूरज की किरणो के साथ् तुम उठती और वैठती है |

मेरी परछाई साथ मेरी रहती है,

कुछ नहीं मुझ से कहती है|

छाव से दोस्ती नहीं धुप तेरा साथी है|

मेरी परछाई साथ मेरी रहती है ,

कुछ नहीं मुझ से कहती है|

सुख और दुख मे साथ् मेरी रहती है|

दिशा की अनुरुप तुम रुप बदलती है|

-

9. वक्त बता मुझको तेरा ईरदा क्या है

वक्त बता मुझको तेरा क्या ईरादा है

उम्मिद कि किरणे है उमंगो का साया है।

वक्त बता मुझको तेरा क्या ईरादा है

हर कदम मुझको तेरी ओर ले जाता है।

वक्त बता मुझको तेरा क्या ईरादा है

खुश हु यह सोंच कर की हर बार,

तुम मेरा साथ् निभाता है।

वक्त बता मुझको तेरा क्या ईरादा है,

तनहां हुँ तनहाई मे बस तेरा ही सहारा है।

इस धुप (उज्जियारे मे) घनघोर घटा साया है।

वक्त बता मुझको तेरा क्या ईरादा है

उम्मिद कि किरणे है उमंगो का साया है|

10. चंचल है मन

चंचल है मन बेइमान नहीं है ,

ख्वाहिसें है पर अरमान नहीं है।

इरादे नेक है पर एक नहीं है ,

उडान है पर सोच नहीं है।

टुटेन न दिल हो व्यवहार सही है।

चंचल है मन बेइमान नहीं है ,

ख्वाहिसें है पर अरमान नहीं है।

उडान है पर पंख नही है ,

दिल बच्चा है पर नादान नहीं है।

उम्मिदे है पर सम्मान नहीं है ,

धरातल है सब उल्झन बडी है।

नभ है पर तारे नहीं है,

प्यार है एक पर सारे नहीं है|

चंचल है मन बेइमान नहीं है ,

ख्वाहिसें है पर अरमान नहीं है|

ख्वाब है तुम हकोकत नहीं है|

11. बारि श की बुन्दे

बारिष के बून्दें मेरा मन झुमे ,रिमझिम रिमझिम

ये बारिश के बूदे|

है काली वदरा छाई मन को मेरे , आई

ये बारिश कि बुंदे मेरे मन को

झुमे मेरा मन झुमे ये बारिश के बुंदे|

बारिश के बुंदे लगे अखियों मुदे कहे

मुझ से झुले|

बारिष के बून्दें , की रंगों मे डुबे ये बारिश के बुंदे|

12. पूर्णतीथी

माँ तेरी याद बहुत आती है ,

तुम मुझे बहुत रुलाती है।

नैनों मे तु मेरे बसी है माँ

नैना तेरी याद में बह्ही है माँ।

आज तेरी पुन्यतिथी है , माँ तेरी परमगती है ,

चरणोंमे तेरी सत सत प्रणाम है ,

माँ पुरा जीवन मेरा तेरे नाम है।

माँ तेरी याद बहुत आती है ,

तुम मुझे बहुत रुलाती है।

तेरी हसी कानो मे बसी है माँ ,

जैसे की तु मेरे आस – पास रहती है।

तु कितना करुणा मयी है माँ,

यादों मे बसी है माँ|

13. शाम का साया

शाम का साया सब्के मन भाया नये नये ,

रुप नये- नये रग लाया शाम का साया|

शाम का साया किसी को खुशियाँ लाया ,

किसी को गम पिलाया शाम का साया|

शाम का साया मदहोशी लाया ,

छटि धुप आया बादल ठण्डक लाया|

शाम का साया दिन भर का थकान मिटाया,

नदि का किनारा मन से प्रित जगाया , शाम का साया|

गुन- गुन करते भंवरे कलियों ने मुस्काया

शाम का साया लोग घुम्ने निकले मन

मध्धम मध्धम मुस्काया , शाम का साया|

शाम का साया ली दिन मे अंगड़ाई,

बिता दोपहर का गहरा धुप का गहरा

सन्नाटा रात ने पहारा लगाया, शाम का साया

शाम का साया नीला आकाश सफेद चादर सा

आसमान का रंग आया, शाम का साया|

लौट रहे पशु पक्षी अपने रैन बसेरों मे

फिर नी उम्मिद मन मे, पीरोये, शाम का साया|

14. सागर की लहरे

सागर की लहरें कहती है , मैं चांद को छुलूं।

सागर की लहरें कहती है, मै गगन को चुमुं।

सागर की लहरें कहती है, मस्त मागन हो लूं।

सागर की लहरें कहती है, मैं कोलाहल हो लुँ।

सागर की लहरें कहती है, मैं मोती पिरोलूं।

सागर की लहरें कहती है, मैं गागर में हो लुँ।

सागर की लहरें कहती है, मैं आगर हो लुँ।

15. गर्मी

गर्मी आई, गर्मी आई सर्दी को दुर भगाई ,

गर्मी आई, गर्मी आई, सब को प्यास है जगाई ,

सबको छाँव की आस है, पर हरियाली

नहीं आस- पास है ,

इसिलिए सब का मन उदास है|

गर्मी आई, गर्मी आई, गर्मी आई सर्दी को दुर भगाई ,

सब कोई पेड लगाने की करो जतन|

सब कोई परेशान है पानी बीन धर्ति भी उदास है ,

पानी का करे जतन यू न रहो अपने से मगन|

गर्मी आई, गर्मी आई, गर्मी आई सर्दी को दुर भगाई,

सूखी धरती सूखा झरना, सूखी नदियाँ,

सूखी ताल तलैया, सबका जीवन

बिन पानी बदहाल है।

16. खेत का सीपाही हू मै

खेत का सिपाही हुँ मैं, खेतीहर कहलाता हुँ मै ,

खेतों को लाल्हाता हुँ मैं|

खेत् का सिपाही हुँ मैं, लोगों का भुख मिटाता हुँ मैं|

खेत का सिपाही हुँ मैं, सिंचाई मैं करवाता हुँ ,

अन्न मैं उब्जाता हुँ|

खेल का सिपाही हुँ मैं, गनना बोउं , गहुँ बौऊ

मैं बौऊ धान , यही है मेरा काम|

खेत का सिपाही हुँ मैं, खेतीहर कहलाता हुँ मै ,

कोल्हु में चलावाता हुँ|

खेत का सिपाही हुँ मैं, बर्षा जब होती कम

कुवे तालाब नदी से पानी लायें हम।

खेत का सिपाही हुँ मैं, खेतीहर कहलाता हुँ,

17. पानी

पानी मेरा रंग सफेद करु ना मैं,

किसी से कोई मत-भेद निर्मल मेरी काया,

हर रंग मुझमे समाया|

पानी मेरा रंग सफेद करु ना मैं,

किसी से कोई मत-भेद प्यास है बुझाऊ सबकी,

करू ना कीसी से भेद-भाव|

हर ढांचे मे समाऊ जिसमे तु दो मुझे उडेल,

बादल बन बर्षा बन गीरू नदी से उषमा बन उडू मै|

बिजली बन घर मे रहुँ मैं, लोग करे मेरा उपयोग अनेक|

सुर्य का मुझ पर पडे प्रकाश

मैं लेलूं इन्द्रधनुष का आकार।

आँशु बन छलकुं मै हो दुख या खुशी अपार।

पानी मेरा रंग सफेद करु ना मैं,

किसी से कोई मत-भेद, निर्मल मेरी काया,

हर रंग मुझमे समाया।

18. उठो सन्वी हुआ सवेरा

उठो सानवी हुवा सवेरा, पंक्षी ने छोड दिया बसेरा,

उठो सानवी हुवा सवेरा, कोयल कुक रही मन्जर पर,

उठो सानवी हुवा सवेरा।

सूरज लिये लालिमा निकाल पडी उज्जियारें को,

उठो सानवी हुवा सवेरा ठण्डी ठण्डी हावा चल रही,

मन मे जैसे गुड-गुदी कर रही,

उठो सानवी हुवा सवेरा अन्खियों को मिचे,

फूलों को सिंचे लोग टहल रहे बाग बगिचे।

उठो सानवी हुवा सवेरा, मुंह हाथ धोलो,

जल्दी से आँखे खो लो। खेल खिलौने तुम्हे बुला रहे, उठो सानवी हुवा सवेरा।

19. बेताब सियाही हू

बेताब सियाही हुँ कुछ उकेरने को मन बिचलीत है।

कुछ गम के बादल छटने दो बेताब सियाही हुँ कुछ उकेरने को।

मन बाबरा किस ओर लिए मुझको सोच के मझधार मे,

उम्मिदों के पतवार मे नाव की डगर लिए नदी कि लहर लिए,

बेताब सियाही हुँ कुछ उकेरने को।

मै तो वही बैठा हुँ, कुछ मन मे बिचार लिए,

किस ओर चलूं वायू के वेग लिए।

उम्मिद की किरणे है जीवन मे रंग भरने को,

जीवन किस करवट बदलेगी मन मे यह सोच लिए,

मन मे उमंग लिए जीवन मे पथगामी हुँ।

20. शब्दों के ताने बाने

शब्दों के ताने-बने मे कुछ ऐसे शब्द पिरोएँगे,

कुछ हंसते हुँए,कुछ गाते हुँए|

कुछ धुप कि चादर ओढे, कुछ छाव कि ओट लिए|

शब्दों के ताने-बाने मे कुछ ऐसे शब्द पिरोएँगे,

कुछ बादल जैसे घनघोर घटा लिए, बुँदो कि राह विछाएंगे|

शब्दों के ताने-बाने मे कुछ ऐसे शब्द पिरोएँगे,

आँखो मे कुछ उम्मिद लिए सपने हम भी संजोएँगे|

शब्दों के ताने-बाने मे कुछ ऐसे शब्द पिरोएँगे,

हंसती ही बगिया मे हम भी फुल खिलायेंगे|

शब्दों के ताने-बाने मे कुछ ऐसे शब्द पिरोएँगे,

गागर मे सागर होंगे, उसमे सब आगर होंगे|

शब्दों के ताने-बाने मे कुछ ऐसे शब्द पिरोएँगे ,

कुछ छद लिखे होंगे ,जिसमे सब मन्त्र मुग्ध होंगे |

content here...